जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – साहित्यम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-101

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

काव्यप्रकाशः (आदितः चतुर्थोल्लासपर्यन्तम्)

इकाई 1 **प्रथमोल्लासः**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **द्वितीयोल्लासः**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का

अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 तृतीयोल्लासः

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 चतुर्थोल्लासे आदितः असंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यनिरूपणं यावत्

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 चतुर्थोल्लासे संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यनिरूपणतः अन्त्यं यावत्

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. काव्य प्रकाश

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – साहित्यम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-102

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

रसगंगाधरः (प्रथमाननम्)

इकाई 1 **आदितः प्रतिभायाः काव्यकारणतानिरूपणं यावत्**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **काव्यस्य चातुर्विध्यमित्यतः काव्यप्रकाशकृद्भेदेषु कटाक्षं यावत्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **रसस्वरूपतः शान्तरसत्वव्यस्थापनं यावत्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **रतिस्वरूपनिरूपणतः विभावादिस्वरूपनिरूपणं यावत्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **शृङ्गारस्य द्वैविध्यनिरूपणतः गुणनिरूपणे वामनादीनां मतं यावत्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. रसगंगाधरः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2

सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – साहित्यम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-103

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

ध्वन्यालोकः (प्रथम–द्वितीयोद्योतौ)

इकाई 1 **प्रथमोद्योते आदितः ध्वनिलक्षणं यावत्**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **प्रथमोद्योते शिष्टो भागः**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंग

इकाई 3 **द्वितीयोद्योते आदितः गुणालङ्कारयोः लक्षणं यावत्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंग

इकाई 4 **माधुर्यगुणनिरूपणतः शब्दशक्त्युद्भवानुरणनरूपध्वनेःस्वरूपं यावत्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंग

इकाई 5 **अर्थशक्त्युद्भवध्वनिनिरूपणतः अन्त्यं यावत्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ध्वन्यालोकः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – साहित्यम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-104

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्तप्रणीतम्)

इकाई 1 **प्रथमोऽंकः**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **द्वितीयोऽंकः**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 3 **तृतीयोऽंकः**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 4 **चतुर्थः पंचमोऽंकश्च**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 5 **षष्ठः सप्तमोऽंकश्च**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. मुद्राराक्षसम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू॰ से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2

सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – साहित्यम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-105

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

वैदिकवाङ्मयस्येतिहासः (आचार्यजगदीशचन्द्रमिश्रः)

इकाई 1 वेदानामाविर्भावकालः भाष्यकाराश्च

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 संहितासाहित्यम्

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का

अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 3 ब्राह्मणग्रन्था आरण्यकग्रन्थाश्च

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 4 उपनिषत्साहित्यम्

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 5 वेदांगानां परिचयः

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वैदिकवाङ्मयस्येतिहासः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – साहित्यम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-201

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् (प्रो. राधाबल्लभत्रिपाठी)

इकाई 1 **काव्यलक्षणनिरूपणतः काव्यकारणनिरूपणं यावत्**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **काव्यभेदनिरूपणतः शास्त्रसंगतिनिरूपणं यावत्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का

अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 3 अलंकारस्वरूपनिरूपणतः अलम्भावनिरूपणं यावत्

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 4 अलंकारविभागनिरूपणतः आभ्यान्तरालंकारनिरूपणपर्यन्तम्

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 5 बाह्यालंकारनिरूपणतः काव्यविशेषविमर्शनिरूपणपर्यन्तम्

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – साहित्यम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-202

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

काव्यप्रकाशः (पंचमोल्लासतोऽष्टमोल्लासपर्यन्तम्)

इकाई 1 पंचमोल्लासे आदितः अन्विताभिधानवादे व्यंजनाया अपरिहार्यतानिरूपणं यावत्

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों

का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **पंचमोल्लासस्य शिष्टो भागः षष्ठोलासश्च**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 3 **सप्तमोल्लासे दोषसामान्यलक्षणतः पदगतसन्दिग्धत्वदोषनिरूपणं यावत्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 4 **वाक्यगतदोषतः अन्त्यं यावत्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 5 **अष्टमोल्लासः**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. काव्यप्रकाशः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू॰ से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4

सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – साहित्यम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-203

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन

परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

रसगंगाधरः (प्रथमाननम्)

इकाई 1 **शब्दगुणाः (श्लेषतः समाधिपर्यन्तम्)**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **अर्थगुणाः (श्लेषतः समाधिपर्यन्तम्)**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 3 **अर्थे तेषां त्रिष्वेवान्तर्भाव इत्यतः मदलक्षणनिरूपणं यावत्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 4 **श्रमलक्षणतः निर्वेदलणपर्यन्तम्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 5 **व्यभिचारिणां संया इत्यतोऽन्त्यं यावत्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. रसगंगाधरः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2

सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – साहित्यम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-204

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

(क) वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथम–द्वितीयोन्मेषौ)

(ख) दशरूपकम् (प्रथम–द्वितीयप्रकाशौ)

इकाई 1 **वक्रोक्तिजीवितस्य प्रथमोन्मेषे आदितः प्रबन्धवक्रतानिरूपणं यावत्**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **वक्रोक्तिजीवितस्य प्रथमोन्मेषे काव्यबन्धस्वरूपतः अन्त्यं यावत्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 3 **वक्रोक्तिजीविते द्वितीय उन्मेषः**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 4 **दशरूपके प्रथमः प्रकाशः**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 5 **दशरूपके द्वितीयः प्रकाशः**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वक्रोक्तिजीवितम्
2. दशरूपकम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – साहित्यम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

(अन्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम) OEC-205

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

पिंगलप्रणीतं छन्दःसूत्रम् (प्रथमतः पंचममध्यायं यावत्)

इकाई 1 **प्रथमोऽध्यायः**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **द्वितीयोऽध्यायः**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **तृतीयोऽध्यायः**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **चतुर्थोऽध्यायः**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **पंचमोऽध्यायः**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. पिंगलप्रणीतं छन्दःसूत्रम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – शुक्लयजुर्वेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-101

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

1. शुक्लयजुर्वेद मा. सहिता महीधरभाष्यसहितः (15–16 अध्यायौ)
2. अर्थसंग्रह – आदितः आरभ्य प्रयोगविधि लक्षणपर्यन्तम्

इकाई 1 **पंचदशाऽध्याय – 1 कण्डिकातः 30 कण्डिकापर्यन्तम्**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **पंचदशाऽध्याय – 31 कण्डिकातः 65 पर्यन्तम्**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 षोडशाऽध्याय – 1 कण्डिकातः 33 पर्यन्तम्

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 षोडशाऽध्याय – 33 कण्डिकातः 66 पर्यन्तम्

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 अर्थसंग्रह – आदितः प्रयोगविधिलक्षणपर्यन्तम्

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. शुक्लयजुर्वेद मा. सहिता महीधरभाष्यसहितः (15–16 अध्यायौ)
2. अर्थसंग्रह – आदितः आरभ्य प्रयोगविधि लक्षणपर्यन्तम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – शुक्लयजुर्वेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-102

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

ऋग्वेदभाष्यभूमिका–आचार्यसायणः। (सर्ववेदसमानम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ऋग्वेदभाष्यभूमिका–आचार्यसायणः। (सर्ववेदसमानम्)

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1

सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – शुक्लयजुर्वेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-103

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

शतपथब्राह्मणम् (प्रथमकाण्डस्य) (5–6 अध्यायौ)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ऋग्वेदभाष्यभूमिका–आचार्यसायणः। (सर्ववेदसमानम्)

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – शुक्लयजुर्वेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-104

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

जैमिनीयन्यायमाला (प्रथमोऽध्यायः)। (सर्ववेदसमानम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. जैमिनीयन्यायमाला (प्रथमोऽध्यायः)।

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – शुक्लयजुर्वेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-105

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

1. शुक्लयजुर्वेदमासंहिता (17–18 अध्यायौ) महीधरभाष्य सहितः।
2. अर्थसंग्रह – क्रमस्वरूपमारभ्य समाप्ति यावत्।

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. शुक्लयजुर्वेदसंहिता
2. अर्थसंग्रह

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5

सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः

मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

विषयः – शुक्लयजुर्वेदः

संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-201

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

कात्यायनश्रौतसूत्रम् (प्रथमोऽध्यायः) सरलावृत्तिः।

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. कात्यायनश्रौतसूत्रम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – शुक्लयजुर्वेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-202

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

शतपथब्राह्मणम् (प्रथमकाण्डस्य 7–8 अध्यायौ)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. शतपथब्राह्मणम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3

सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – शुक्लयजुर्वेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-203

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

जैमिनीयन्यायमाला (द्वितीयोऽध्यायः) (सर्ववेदसमानम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. जैमिनीयन्यायमाला

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – शुक्लयजुर्वेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-204

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

भाष्यवैशिष्ट्यविवेचनम् (यजुर्वेदसम्बद्धानाम्) वेदभाष्यकाराणाम् वैदिकसाहित्येतिहासः, डॉ. जगदीशचन्द्रमिश्रः

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. भाष्यवैशिष्ट्यविवेचनम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – शुक्लयजुर्वेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

(अन्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम) OEC-205

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) **पाठ्यसामग्री**

निरूक्तसमुच्चयः (आ. वररुचि चौ0 प्रका.)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. निरूक्तसमुच्चयः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू॰ से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2

सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – सामवेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-101

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

सामवेद संहितायाः सामग्रभाष्यस्य उत्तरार्चिकस्य 11–15 अध्यायाः द्राह्यायण श्रौतसूत्रम् धन्वीभाष्यसहितम् (1, 2 पहले)
उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सामवेद संहितायाः सामग्रभाष्यम्
2. द्राह्यायण श्रौतसूत्रम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – सामवेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-102

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) **पाठ्यसामग्री**

ऋग्वेदभाष्यभूमिका–सायणाचार्यः (सर्ववेदसमानम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ऋग्वेदभाष्यभूमिका–आचार्यसायणः।

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1

सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – सामवेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-103

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

ऋक्तन्त्रम्

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ऋक्तन्त्रम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – सामवेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-104

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

जैमिनीयन्यायमाला (प्रथमोऽध्यायः)। (सर्ववेदसमानम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. जैमिनीयन्यायमाला

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – सामवेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-105

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन

स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

ताण्ड्य महाब्राह्मणम् (10 अध्यायाः)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ताण्ड्य महाब्राह्मणम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1

सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः

मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

विषयः – सामवेदः

संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-201

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

द्राह्यायण श्रौतसूत्रम् धन्वीभाष्य सहितम् (3, 4, 5 पहलानि)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. द्राह्यायण श्रौतसूत्रम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – सामवेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-202

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

यज्ञतत्त्वप्रकाशः

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. यज्ञतत्त्वप्रकाशः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3

सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – सामवेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-203

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

जैमिनीयन्यायमाला (द्वितीयोऽध्यायः) (सर्ववेदसमानम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. जैमिनीयन्यायमाला

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – सामवेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-204

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

वैदिकसाहित्यस्येतिहासः

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वैदिकसाहित्यस्येतिहासः – पं. जगदीश चन्द्र मिश्र, चौखम्बा वाराणसी।
2. वैदिकवाङ्मयस्येतिहासः – डॉ. शम्भु कुमार झा, जगदीश पुस्तक भण्डार, जयपुर।

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – सामवेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

(अन्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम) OEC-205

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

निरूक्तसमुच्चयः (आ. वररुचि चौ0 प्रका.)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. निरूक्तसमुच्चयः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – अथर्ववेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-101

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

1. अथर्ववेद संहिताया सायणभाष्यम् 1 तः 5 अनुवाक
2. शौनकीय चतुरध्यापिका 1–2 अध्याय

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. अथर्ववेद संहिता
2. शौनकीय चतुरध्यापिका

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू॰ से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4

सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – अथर्ववेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-102

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

ऋग्वेदभाष्यभूमिका–सायणाचार्यः (सर्ववेदसमानम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ऋग्वेदभाष्यभूमिका–आचार्यसायणः।

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1

सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – अथर्ववेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-103

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

गोपथब्राह्मणम् – 1–5 प्रपाठकाः सण्याख्यम्

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. गोपथब्राह्मणम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
5. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
6. टिप्पणी	4x5 = 20
7. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
8. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – अथर्ववेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-104

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

जैमिनीयन्यायमाला (प्रथमोऽध्यायः)। (सर्ववेदसमानम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. जैमिनीयन्यायमाला

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – अथर्ववेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-105

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन

स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

शौनकीय रूद्रमन्त्रार्थदीपिका सायणभाष्यसहिता

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. शौनकीय रूद्रमन्त्रार्थदीपिका सायणभाष्यसहिता, डॉ. नारायण होसमने

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1

सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः

मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

विषयः – अथर्ववेदः

संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-201

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

गोपथ ब्राह्मणम् – उत्तरभागः सव्याख्यः (1 तः 6 प्रपाठक)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. गोपथ ब्राह्मणम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – अथर्ववेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-202

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

वैतानश्रौतसूत्रम् – व्याख्यासहितम् (1 तः 8 अध्यायः)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वैतानश्रौतसूत्रम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3

सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – अथर्ववेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-203

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

जैमिनीयन्यायमाला (द्वितीयोऽध्यायः) (सर्ववेदसमानम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. जैमिनीयन्यायमाला

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – अथर्ववेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-204

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

अथर्ववेदभाष्यभूमिकायाम् अथर्वपरिशिष्टम् (1 तः 30 परिशिष्ट)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. अथर्ववेदभाष्यभूमिका

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10

2. टिप्पणी 4x5 = 20

3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20

4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – अथर्ववेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

(अन्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम) OEC-205

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

निरूक्तसमुच्चयः (आ. वररुचि चौ0 प्रका.)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. निरूक्तसमुच्चयः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू॰ से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4

सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – ऋग्वेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-101

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

1. ऋग्वेदसंहितायाः प्रथम–द्वितीय सूक्ते सायणभाष्यसहिते

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ऋग्वेद संहिता

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – ऋग्वेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-102

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) **पाठ्यसामग्री**

ऋग्वेदभाष्यभूमिका–सायणाचार्यः (सर्ववेदसमानम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ऋग्वेदभाष्यभूमिका–आचार्यसायणः।

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2

सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – ऋग्वेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-103

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

ऋक्प्रातिशाख्यम् (5, 6, 7 पटलानि)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ऋक्प्रातिशाख्यम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – ऋग्वेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-104

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

जैमिनीयन्यायमाला (प्रथमोऽध्यायः)। (सर्ववेदसमानम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. जैमिनीयन्यायमाला

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – ऋग्वेदः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-105

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन

स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

बृहद्देवता शौनकीया (1, 2, 3, 4 अध्यायाः)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. बृहद्देवता शौनकीया

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1

सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः

मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

विषयः – ऋग्वेदः

संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-201

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

ऐतरेयब्राह्मणम् सायणभाष्यम् (द्वितीयपंचिकायाः 1 तः 10 अध्यायाः)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ऐतरेयब्राह्मणम् सायणभाष्यम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – ऋग्वेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-202

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

ऐतरेयोपनिषद् (सम्पूर्णम् सभाष्यम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ऐतरेयोपनिषद्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3

सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या/विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – अथर्ववेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-203

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

जैमिनीयन्यायमाला (द्वितीयोऽध्यायः) (सर्ववेदसमानम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. जैमिनीयन्यायमाला

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – ऋग्वेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-204

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

बृहद्देवता शौनकीया (5, 6, 7, 8 अध्यायाः)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. बृहद्देवता शौनकीया

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10

2. टिप्पणी 4x5 = 20

3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20

4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – ऋग्वेदः
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

(अन्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम) OEC-205

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

निरूक्तसमुच्चयः (आ. वररुचि चौ0 प्रका.)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. निरूक्तसमुच्चयः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू॰ से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4

सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – नव्यव्याकरणम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-101

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

लघुशब्देन्दुशेखरः, आदितः परिभाषाप्रकरणं यावत

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. लघुशब्देन्दुशेखरः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. व्याकरणशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – नव्यव्याकरणम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-102

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

वाक्यपदीयस्य ब्रह्मकाण्डम्

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वाक्यपदीयस्य ब्रह्मकाण्डम

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. व्याकरणशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – नव्यव्याकरणम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-103

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन

स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

वैयाकरणभूषणसारः, आदितः सुबर्थप्रकरणं यावत्

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वैयाकरणभूषणसारः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. व्याकरणशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1

सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – नव्यव्याकरणम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-104

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

निरुक्तम्, प्रथमद्वितीयाध्यायौ

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. निरुक्तम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. व्याकरणशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – नव्यव्यारकणम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-105

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

महाभाष्यम् (1 तः 5 आह्निकानि)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. महाभाष्यम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. व्याकरणशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः

मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

विषयः – नव्यव्याकरणम्

संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-201

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

लघुशब्देन्दुशेखरः, अच्सन्धितः स्वादिसन्धिं यावत्

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. लघुशब्देन्दुशेखरः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. व्याकरणशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – नव्यव्याकरणम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-202

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्याः शब्दखण्डः

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. व्याकरणशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3

सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – नव्यव्याकरणम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-203

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

वैयाकरणभूषणसारः, नामार्थनिर्णयतः ग्रन्थसमाप्तिं यावत्

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वैयाकरणभूषणसारः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. व्याकरणशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू‍प से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – नव्यव्याकरणम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-204

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

महाभाष्यम् (6 तः 9 आह्निकानि)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. महाभाष्यम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. व्याकरणशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10

2. टिप्पणी 4x5 = 20

3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20

4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – नव्यव्याकरणम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

(अन्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम) OEC-205

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

लघुसिद्धान्तकौमुदी (संज्ञा–सन्धि–कारकप्रकरणम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. व्याकरणशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4

सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – गणितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-101

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

सिद्धान्तशिरोमणिः गणिताध्याये (मध्माधिकार–स्पष्टाधिकारौ)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सिद्धान्तशिरोमणिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू॰ से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – गणितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-102

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

वास्तवचन्द्रशृंगोन्नतिसाधनम् (म.म. सुधाकनद्विवेदी)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वास्तवचन्द्रशृंगोन्नतिसाधनम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – गणितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-103

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन

स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

ग्रहनक्षत्राणि (डॉ. सम्पूर्णानन्दः)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ग्रहनक्षत्राणि

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1

सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – गणितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-104

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

भारतीयकुण्डलीविज्ञानम् (मीठालाल हिम्मतराम औझा)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. भारतीयकुण्डलीविज्ञानम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – गणितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-105

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

बृहज्जातकम् (राजयोगाध्यायपर्यन्तम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. बृहज्जातकम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः

मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

विषयः – गणितज्योतिषम्

संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-201

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

सिद्धान्ततत्त्वविवेकः (सूर्य–चन्द्रग्रहणाधिकारः बिम्बाधिकारश्च)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सिद्धान्ततत्त्वविवेकः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – गणितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-202

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

सिद्धान्तशिरोमणिः गणिताध्याये (त्रिप्रश्नाधिकारतः सूर्यग्रहणाधिकारान्त)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सिद्धान्तशिरोमणिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3

सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – गणितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-203

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

चलनकलनम् प्रथमद्वितीयोऽध्यायौ

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. चलनकलनम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – गणितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-204

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

वास्तुरत्नाकर (सम्पूर्णः)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वास्तुरत्नाकर

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10

2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – गणितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

(अन्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम) OEC-205

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

बृहदवकहडाचक्रम् (सम्पूर्ण)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. बृहदवकहडाचक्रम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू॰ से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4

सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – फलितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-101

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

भारतीयकुण्डलीविज्ञानम् (प्रथमद्वितीयभागौ)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. भारतीयकुण्डलीविज्ञानम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – फलितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-102

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

फलदीपिका (5–14 अध्यायाः)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. फलदीपिका

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – फलितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-103

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन

स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

लघुपाराशरी

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. लघुपाराशरी

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1

सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – फलितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-104

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

बृहत्संहिता 'आदितोऽगस्त्यचाराध्यायान्ता'

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. बृहत्संहिता

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – फलितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-105

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

बृहज्जातकम् (राजयोगाध्यायपर्यन्तम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. बृहज्जातकम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः

मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

विषयः – फलितज्योतिषम्

संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-201

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

फलदीपिका (15–21 अध्यायाः)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. फलदीपिका

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – फलितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-202

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

भारतीयकुण्डलीविज्ञानम् (तृतीयचतुर्थभागौ)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. भारतीयकुण्डलीविज्ञानम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3

सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – फलिज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-203

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

नरपतिजयचर्यास्वरोदयः

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. नरपतिजयचर्यास्वरोदयः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – फलितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-204

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

बृहत्संहिता (गर्भलक्षणाध्यायतः उल्कालक्षणाध्यायपर्यन्ता)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. बृहत्संहिता

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10

2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – गणितज्योतिषम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

(अन्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम) OEC-205

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

बृहदवकहडाचक्रम् (सम्पूर्ण)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. बृहदवकहडाचक्रम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू॰ से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4

सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – सामान्यदर्शनम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-101

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

तत्त्वार्थसूत्रम् आदिमाः पंचाध्यायाः

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. तत्त्वार्थसूत्र विवेचन सहित, पार्श्वनाथविद्यापीठ वाराणसी, 2001
2. तत्त्वार्थसूत्र प्रदीपिका, सुबोधव्याख्यासहिता प्रो. वीरसागरजैन अहिंसा प्रसारक ट्रष्ट मुम्बई 2010

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शनशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – सामान्यदर्शनम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-102

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

बौद्धतर्कभाषा आदितः स्वार्थानुमानपर्यन्तम्

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. डॉ. बी.एन.सिंह, अंग्रेजीअनुवादसहित आशाप्रकाशन, गोदौलिया वाराणसी
2. बौद्धतर्कभाषा बौद्धभारती।

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शनशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2

सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – सामान्यदर्शन
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-103

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

न्यायसूत्रम् वात्स्यायनभाष्यसहितम् प्रथमाध्यायः

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. न्यायसूत्रम् संपादक विनायकगणेश आपो आनन्दाश्रममुद्रणालय, पुणे 1922
2. न्यायसूत्रम् वात्स्यायनभाष्यसहितम्, ढुढिराजशास्त्री, चौखम्भा सं. संस्थान वाराणसी
3. न्यायसूत्रभाष्यम् – स्वामीद्वारिकादासशास्त्री, बौद्धभारती, पो. बा. नं. 1049, वाराणसी 1998
4. न्यायदर्शनम् सुनन्दाहिन्दीव्याख्यामलंकृतम्, सच्चिदानन्दमिश्र, भारतीविद्याप्रकाशन वाराणसी।

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शनशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।

8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या/विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – सामान्यदर्शन
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-104

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

वैशेषिकसूत्रम् प्रशस्तपादभाष्यम् प्रशस्तपादकृतम् आदितः परवापरत्वनिरूपणपर्यन्तम्

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. प्रशस्तपादभाष्यम्, न्यायकन्दलीव्याख्यासहितम्, श्रीदुर्गाधरझा, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी 1997
2. व्योमवती भाग–1, भाग–2 सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शनशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – सामान्यदर्शनम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-105

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

सांख्यसूत्राणि सांख्यप्रवचनभाष्यम् विज्ञानभिक्षुकृतम् प्रथमोऽध्यायः

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सांख्यप्रवचनभाष्य गजाननशास्त्रीमुसलगांवकर, चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शनशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3

सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः

मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

विषयः – सामान्यदर्शनम्

संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-201

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

तत्त्वार्थसूत्रम् (6 तः 10 अध्यायाः)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. तत्त्वार्थसूत्र विवेचन सहित, पार्श्वनाथविद्यापीठ वाराणसी, 2001
2. तत्त्वार्थसूत्र प्रदीपिका, सुबोधव्याख्यासहिता प्रो. वीरसागरजैन अहिंसा प्रसारक ट्रस्ट मुम्बई 2010

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शनशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – सामान्यदर्शनम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-202

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

बौद्धतर्कभाषा परार्थानुमानपरिच्छेदः

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. डॉ. बी.एन. सिंह, अंग्रेजीअनुवादसहित आशाप्रकाशन, गोदौलिया वाराणसी
2. बौद्धतर्कभाषा बौद्धभारती।

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शनशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2

सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – सामान्यदर्शनम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-203

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

न्यायसूत्रम् वात्स्यायनभाष्यसहितम् द्वितीयाध्यायः

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. न्यायसूत्रम् संपादक विनायकगणेश आपो आनन्दाश्रममुद्रणालय, पुणे 1922
2. न्यायसूत्रम् वात्स्यायनभाष्यसहितम्, ढुढिराजशास्त्री, चौखम्भा सं. संस्थान वाराणसी
3. न्यायसूत्रभाष्यम् स्वामीद्वारिकादासशास्त्री, बौद्धभारती, पो. बा. नं. 1049, वाराणसी 1998
4. न्यायदर्शनम् सुनन्दाहिन्दीव्याख्यासमलंकृतम्, सच्चिदानन्दमिश्र, भारतीविद्याप्रकाशन वाराणसी।

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शनशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या/विवरण 2x10 = 20

4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – सामान्यदर्शनम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-204

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

वैशेषिकसूत्रम् प्रशस्तपादभाष्यम् प्रशस्तपादकृतम् बुद्धिनिरूपणतः समाप्तिपर्यन्तम्

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. प्रशस्तपादभाष्यम्, न्यायकन्दलीव्याख्यासहितम्, श्रीदुर्गाधरझा, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी 1997
2. व्योमवती भाग–1, भाग–2 सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शनशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू॰ से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4

सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – सामान्यदर्शनम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

(अन्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम) OEC-205

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) **पाठ्यसामग्री**

सर्वदर्शनसंग्रहः जैनबौद्धपाशुपतरामानुजशांकरदर्शनानि

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सर्वदर्शनसंग्रहः व्याख्या वासुदेवशास्त्री अभ्यंकर भारतीयकला प्रकाशन दिल्ली।
2. सर्वदर्शन हिन्दी अनुवाद चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शनशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1

सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – निम्बार्कदर्शनम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-101

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

इकाई 1 **छान्दोग्योपनिषद् (3 अध्याय)**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **छान्दोग्योपनिषद् (4 अध्याय)**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का

अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 छान्दोग्योपनिषद् (5 अध्याय)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 छान्दोग्योपनिषद् (6 अध्याय)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 छान्दोग्योपनिषद् (7 अध्याय)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. छान्दोग्योपनिषद्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. भारतीयदर्शन का इतिहास
2. निम्बार्क दर्शन परिचय

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – निम्बार्कदर्शनम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-102

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

इकाई 1 **अध्यासगिरिवज्रः (मंगलाचरणम्, अनुबन्धचतुष्टयम्)**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **अध्यासगिरिवज्रः (पूर्वार्द्धे अर्धम्)**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **अध्यासगिरिवज्रः (पूर्वार्द्धे शेषम्)**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **अध्यासगिरिवज्रः (उत्तरार्द्धे अर्धम्)**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **अध्यासगिरिवज्रः (उत्तरार्द्धे शेषम्)**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. अध्यासगिरिवज्रः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. भारतीयदर्शन का इतिहास
2. निम्बार्क दर्शन परिचय

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2

सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – निम्बार्कदर्शनम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-103

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

इकाई 1 **बृहदारण्यकोपनिषद् (उपनिषद् परिचय)**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **बृहदारण्यकोपनिषद् (1 अध्यायः)**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंग

इकाई 3 **बृहदारण्यकोपनिषद् (2 अध्यायः)**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंग

इकाई 4 **बृहदारण्यकोपनिषद् (3 अध्यायः)**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंग

इकाई 5 बृहदारण्यकोपनिषद् (4 अध्यायः)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. बृहदारण्यकोपनिषद

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. भारतीयदर्शन का इतिहास
2. निम्बार्क दर्शन परिचय

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – निम्बार्कदर्शनम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-104

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

इकाई 1 **पाश्चात्त्यदर्शनपरिचय (प्राचीनपाश्चात्त्यदर्शन)**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **पाश्चात्यदर्शनपरिचय (सुकरातदर्शन)**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 3 पाश्चात्यदर्शनपरिचय (प्लेटोदर्शन)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 4 पाश्चात्यदर्शनपरिचय (अरस्तु–हीगलदर्शन)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 5 पाश्चात्यदर्शनपरिचय (देकार्त–लागदर्शन)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. आधुनिकप्रतीच्यप्रमाणमीमांसा, रा.सं.वी. तिरूपति
2. पाश्चात्त्यदर्शनस्येतिहासः, हैदराबाद

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शन का इतिहास
2. पाश्चात्त्यदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – निम्बार्कदर्शनम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-105

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

सर्वदर्शनसंग्रहः जैनबौद्धपाशुपतरामानुजशांकरदर्शनानि

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सर्वदर्शनसंग्रहः व्याख्या वासुदेवशास्त्री अभ्यंकर भारतीयकला प्रकाशन दिल्ली।
2. सर्वदर्शन हिन्दी अनुवाद चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. भारतीयदर्शन का इतिहास
2. निम्बार्क दर्शन परिचय

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2

सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – निम्बार्कदर्शनम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-201

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

इकाई 1 **श्रीमद्भागवत (10 स्कन्ध, 1 तः 5 अध्याय)**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **श्रीमद्भागवत (10 स्कन्ध, 6 तः 10 अध्याय)**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का

अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 3 श्रीमद्भागवत (10 स्कन्ध, 11 तः 15 अध्याय)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 4 श्रीमद्भागवत (10 स्कन्ध, 16 तः 20 अध्याय)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 5 श्रीमद्भागवत (10 स्कन्ध, 21 तः 27 अध्याय)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. श्रीमद्भागवत

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. भारतीयदर्शन का इतिहास
2. निम्बार्क दर्शन परिचय

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – निम्बार्कदर्शनम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-202

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

इकाई 1 कठोपनिषद् (1 वल्ली)

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 कठोपनिषद् (2 वल्ली पूर्वार्द्ध)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 3 कठोपनिषद् (2 वल्ली उत्तरार्द्ध)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 4 कठोपनिषद् (3 वल्ली पूर्वार्द्ध)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 5 कठोपनिषद् (3 वल्ली उत्तरार्द्ध)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. कठोपनिषद्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. भारतीयदर्शन का इतिहास
2. निम्बार्क दर्शन परिचय

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1

सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – निम्बार्कदर्शनम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-203

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

इकाई 1 **अध्यासगिरिवज्रः (2 अध्याय)**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **अध्यासगिरिवज्रः (3 अध्याय)**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 3 अध्यासगिरिवज्रः (4 अध्याय)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 4 अध्यासगिरिवज्रः (5 अध्याय)

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे।

इकाई 5 ग्रन्थसारांश

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. अध्यासगिरिवज्रः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. भारतीयदर्शन का इतिहास
2. निम्बार्क दर्शन परिचय

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – निम्बार्कदर्शनम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-204

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

इकाई 1 लघुमंजूषा (1 अध्यायः)

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों

का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 लघुमंजूषा (2 अध्यायः)

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 3 लघुमंजूषा (3 अध्यायः)

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 4 लघुमंजूषा (4 अध्यायः)

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 5 ग्रन्थसारांश

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. लघुमंजूषा

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शन का इतिहास
2. पाश्चात्त्यदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3

सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – निम्बार्कदर्शनम्
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

(अन्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम) OEC-205

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

आत्मपरमात्मतत्त्वादर्शः

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. लघुमंजूषा

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शन का इतिहास
2. पाश्चात्त्यदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – न्यायदर्शनम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

बिन्दु संख्या A,B,D,E,F & G **सामान्यदर्शन के अनुसार रहेगा। एवं बिन्दु संख्या** C **का विवरण निम्नानुसार है।**

Sr.No.	Subject Code	Title of the Courses
1	CC-101	व्युत्पत्तिवादः (1–2 कारकौ)
2	CC-102	न्यायकुसुमांजलिः
3	CC-103	शब्दशक्तिप्रकाशिका (नामप्रकरणान्तम्)
4	CC-104	वैशेषिकसूत्रोपस्कारः (1 तः 5 पर्यन्तम्)
5	CC-105	सर्वदर्शन संग्रह जैनबौद्धपाशुपतरामानुजशांकरदर्शनानि

संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

Sr.No.	Subject Code	Title of the Courses
1	CC-201	सिद्धान्तलक्षणम् – गादाधरी
2	CC-202	चतुर्दशलक्षणी – स्वलक्षणद्वयम्, सार्वभौमलक्षणं च
3	CC-203	आत्मतत्त्वविवेकः
4	CC-204	न्यायसूत्रम् भाष्यसहितम् प्रथमोऽध्यायः
5	OEC-205	तर्कभाषा (सम्पूर्णा)

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – जैनदर्शनम्
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

बिन्दु संख्या A,B,D,E,F & G **सामान्यदर्शन के अनुसार रहेगा। एवं बिन्दु संख्या** C **का विवरण निम्नानुसार है।**

Sr.No.	Subject Code	Title of the Courses
1	CC-101	प्रवचनसारः आदितः अधिकारद्वयम्
2	CC-102	सम्यक्त्वसारशतकम् (आचार्यज्ञानसागरः)
3	CC-103	गोम्मटसारः (जीवकाण्डः गणितभागवर्जितम्)
4	CC-104	समयसारः आदितः अधिकारद्वयम्
5	CC-105	तत्त्वार्थ राजवार्तिकम् 2 अधिकारः

संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

Sr.No.	Subject Code	Title of the Courses
1	CC-201	तत्त्वार्थ राजवार्तिकम् 5–6 अधिकारौ
2	CC-202	प्रमाणमीमांसा 1–2 अध्यायौ
3	CC-203	नियमसारः 1 तः 5 अधिकार पर्यन्तम्
4	CC-204	अष्टसहस्री कारिका 1–10
5	OEC-205	तत्त्वार्थसूत्रम् 1–5 अध्यायः

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – प्राकृतजैनागमः
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

बिन्दु संख्या A,B,D,E,F & G **सामान्यदर्शन के अनुसार रहेगा। एवं बिन्दु संख्या** C **का विवरण निम्नानुसार है।**

Sr.No.	Subject Code	Title of the Courses
1	CC-101	मृच्छकटिकम् (प्राकृतम्)
2	CC-102	भगवतीआराधना (1 तः 100 गाथा)
3	CC-103	नियमासारः (1 तः 100 गाथा)
4	CC-104	सम्मईसुत्तम – प्रथमकाण्ड
5	CC-105	अर्हत्प्रवचन (1 तः 10 अध्यायः)

संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

Sr.No.	Subject Code	Title of the Courses
1	CC-201	कुमारपालचरित (1–2)
2	CC-202	नियमासारः (101 तः 185 गाथा)
3	CC-203	प्रवचनसारः, ज्ञेयाधिकारः
4	CC-204	प्राकृतगद्यसोपान 1 तः 10 (डॉ. कमलचन्द सोगाणी)
5	OEC-205	प्राकृत व्याकरण प्रवेशिका, प्राकृत अभ्यास सौरभम् 1 तः 39 पाठः

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (M.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
विषयः – धर्मशास्त्र
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-101

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

निर्णयसिन्धुः (1 तः 2 परिच्छेदः)
उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. निर्णयसिन्धुः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – धर्मशास्त्र
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-102

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

वीरमित्रोदयः (संस्कारप्रकाशः) (गर्भाधानसंस्कारतः समाप्तिपर्यन्तम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वीरमित्रोदयः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1

सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – धर्मशास्त्र
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-103

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

धर्मसिन्धुः (तृतीयपरिच्छेदस्य उत्तरार्द्धः)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. धर्मसिन्धुः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – धर्मशास्त्र
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-104

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

कालमाधवः (माधवाचार्यकृतः)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. कालमाधवः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – धर्मशास्त्र
संयुक्ताचार्य सप्तम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – प्रथम सेमेस्टर

CC-105

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

व्यवहारमयूखः – नीलकण्ठकृतः

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. व्यवहारमयूखः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आचार्यपाठ्यक्रमः

मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

विषयः – धर्मशास्त्र

संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-201

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

याज्ञवल्क्यस्मृतिः (प्रायश्चित्ताध्यायः) मिताक्षराटीका सहिता

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. याज्ञवल्क्यस्मृतिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – धर्मशास्त्र
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-202

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

आचारमयूखः नीलकण्ठकृतः

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. आचारमयूखः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3

सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – धर्मशास्त्र
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-203

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

वीरमित्रोदयः (शुद्धिप्रकाशः)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वीरमित्रोदयः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**

विषयः – धर्मशास्त्र
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर/आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

CC-204

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं/अवधारणाओं/विचारप्रक्रिया/चिन्तनशैली/सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य/वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

नीतिमयूखः नीलकण्ठकृतः

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. नीतिमयूखः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**70**
1. लघूत्तरात्मक	5x2 = 10
2. टिप्पणी	4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण	2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना	1x20 = 20
II आन्तरिक मूल्यांकन	**30**
कुल अंक (I+II)	**70+30 = 100**

विषयः – धर्मशास्त्र
संयुक्ताचार्य अष्टम सेमेस्टर / आचार्य प्रथम – द्वितीय सेमेस्टर

(अन्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम) OEC-205

Marks (70+30 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

स्नातकस्तर पर शास्त्रीय आधारभूत मान्यताओं / अवधारणाओं / विचारप्रक्रिया / चिन्तनशैली / सिद्धान्तों के जानकार छात्रों को तत्तच्छास्त्रों की वादशैली, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त का कोटिक्रमानुसार प्रवर्धन की प्रक्रियाओं एवं समान तन्त्र में उत्पन्न परस्पर वैमत्य के हेतु एवं समरसता की सम्भावनाओं की ओर उन्मुख करना

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को अपने अध्ययन के क्षेत्र में हुई विचार की क्रान्ति को हृदयंगम कराता हुआ उनको नए चिन्तन हेतु प्रेरित करेगा। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मूल्यपरक एवं राष्ट्रवाद के विचारों के साथ अपने द्वारा अध्ययन किए जा रहे शास्त्र में स्वारस्य या वैरस्य का आकलन कर उन स्वारस्य / वैरस्य के कारण व समाधान हेतु शास्त्रीय समाधान को ढूंढने में समर्थ होगा। शास्त्र चिन्तन परम्परा को आगे बढाता हुआ अपने चिन्तन से उस शास्त्र को एवं समाज को भी योगदान दे सकता है।

(C) पाठ्यसामग्री

मनुस्मृतिः (व्यवहाराध्यायः) मिताक्षरासहिता

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. मनुस्मृतिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः हो चुका है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ तुलनात्मक विशलेषण से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **70**

1. लघूत्तरात्मक 5x2 = 10
2. टिप्पणी 4x5 = 20
3. व्याख्या / विवरण 2x10 = 20
4. व्याख्या–समीक्षण–तुलना 1x20 = 20

II आन्तरिक मूल्यांकन **30**

कुल अंक (I+II) **70+30 = 100**